How to Cite:
डॉ. प्रभात कुमार पाण्डेय (June 2018 Special Issue). सार्वजनिक व्यय का आर्थिक विकास में योगदान
***International Journal of Economic Perspectives*,*12*(1), 120-123**
Retrieved fromhttps://ijeponline.com/index.php/journal

सार्वजनिक व्यय का आर्थिक विकास में योगदान

डॉ. प्रभात कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
भाऊराव देवरस राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुद्धी, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

सारांश

किसी भी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक व्यय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सार्वजनिक व्यय से आशय सरकार द्वारा विभिन्न आर्थिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किए जाने वाले व्यय से है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में सरकार केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आर्थिक विकास को गति देने के लिए अनेक विकासात्मक कार्यक्रमों तथा योजनाओं पर व्यय करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, कृषि, उद्योग, ऊर्जा तथा सामाजिक कल्याण जैसे क्षेत्रों में सरकार द्वारा किया गया व्यय आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है और विकास की प्रक्रिया को तेज करता है। भारत जैसे विकासशील देशों में सार्वजनिक व्यय का महत्व और भी अधिक है। स्वतंत्रता के बाद से भारत में सार्वजनिक व्यय में निरंतर वृद्धि हुई है। जिससे आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में सरकार की भूमिका लगातार बढ़ती गई है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में सार्वजनिक व्यय की अवधारणा, उसके प्रकारों तथा आर्थिक विकास में उसकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी अध्ययन किया गया है कि सार्वजनिक व्यय किस प्रकार राष्ट्रीय आय, रोजगार, उत्पादन तथा सामाजिक कल्याण को प्रभावित करता है।

मुख्य शब्द: सार्वजनिक व्यय, आर्थिक विकास, सरकारी व्यय, राष्ट्रीय आय, सामाजिक कल्याण

भूमिका

आधुनिक अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका अत्यंत व्यापक हो गई है। सरकार न केवल प्रशासनिक कार्यों का संचालन करती है, बल्कि आर्थिक विकास को गति देने के लिए विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों पर व्यय भी करती है। सरकार द्वारा किए जाने वाले इस व्यय को सार्वजनिक व्यय कहा जाता है। आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि उत्पादन के साधनों का उचित उपयोग हो, आधारभूत संरचना का विकास हो तथा सामाजिक सेवाओं का विस्तार किया जाए। इन सभी क्षेत्रों में सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत जैसे विकासशील देश में सार्वजनिक व्यय आर्थिक विकास का एक प्रमुख साधन है। भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में सार्वजनिक निवेश को विशेष महत्व दिया गया है। पिछले **पंचवर्षीय योजनाओं** में अवसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा ग्रामीण विकास के लिए बड़े पैमाने पर सरकारी व्यय का प्रावधान किया गया है। इससे आर्थिक विकास की गति को तेज करने का प्रयास किया गया है।

सार्वजनिक व्यय की अवधारणा को विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अलग-अलग प्रकार से परिभाषित किया है।

डाल्टन के अनुसार, **"सार्वजनिक व्यय वह व्यय है जो सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा समाज की सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।"** (डाल्टन, 1954, पृ. 32)। पीगू के अनुसार, **"सार्वजनिक व्यय वह व्यय है जो सरकार द्वारा सार्वजनिक कल्याण को बढ़ाने और सामाजिक सेवाओं के विस्तार के लिए किया जाता है।"**(पीगू, 1952, पृ. 41)। मसग्रेव के अनुसार, **"सार्वजनिक व्यय वह साधन है**

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 17 April 2018, Revised: 10 May 2018, Accepted: 28 June2018

How to Cite:
डॉ. प्रभात कुमार पाण्डेय (June 2018 Special Issue). सार्वजनिक व्यय का आर्थिक विकास में योगदान
***International Journal of Economic Perspectives*,*12*(1), 120-123**
Retrieved fromhttps://ijeponline.com/index.php/journal

जिसके माध्यम से सरकार संसाधनों का आवंटन, आय का पुनर्वितरण तथा आर्थिक स्थिरता स्थापित करने का प्रयास करती है।"

(मसग्रेव, 1959, पृ. 6)

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक व्यय केवल सरकारी खर्च भर नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास, सामाजिक कल्याण तथा संसाधनों के संतुलित वितरण का महत्वपूर्ण माध्यम है। विशेष रूप से विकासशील देशों में सार्वजनिक व्यय के माध्यम से अवसंरचना का निर्माण, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, रोजगार सृजन तथा गरीबी उन्मूलन जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. सार्वजनिक व्यय की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. सार्वजनिक व्यय के प्रकारों का अध्ययन करना।
3. आर्थिक विकास में सार्वजनिक व्यय की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. सार्वजनिक व्यय के माध्यम से रोजगार तथा आय वितरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. सार्वजनिक व्यय के महत्व को समझना।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। इसके लिए विभिन्न अर्थशास्त्रियों की पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, आर्थिक सर्वेक्षणों तथा शोध-पत्रों का अध्ययन किया गया है। उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर सार्वजनिक व्यय की प्रवृत्तियों तथा आर्थिक विकास पर उसके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

सार्वजनिक व्यय की अवधारणा

सार्वजनिक व्यय से आशय सरकार द्वारा सार्वजनिक हित के लिए किए गए व्यय से है। सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, परिवहन, कृषि, उद्योग तथा सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में जो व्यय करती है, वह सार्वजनिक व्यय कहलाता है।

आधुनिक समय में सार्वजनिक व्यय का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। वर्तमान मे **भारत में केंद्र और राज्य सरकारों का संयुक्त सार्वजनिक व्यय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 28–30 प्रतिशत** के आसपास पहुँच गया है। इससे स्पष्ट होता है कि आर्थिक गतिविधियों में सरकार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है।

सार्वजनिक व्यय के प्रकार

1. विकासात्मक व्यय : यह वह व्यय है जो आर्थिक और सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करता है। जैसे— शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और परिवहन पर किया गया व्यय।

2. अविकासात्मक व्यय : वह व्यय जो सीधे उत्पादन में वृद्धि नहीं करता, अविकासात्मक व्यय कहलाता है। जैसे— प्रशासनिक व्यय, रक्षा व्यय तथा ऋणों पर ब्याज भुगतान।

3. पूंजीगत व्यय : जिस व्यय से स्थायी परिसंपत्तियों का निर्माण होता है, उसे पूंजीगत व्यय कहा जाता है। जैसे— बांध, सड़क, बिजली परियोजनाएँ।

4. राजस्व व्यय : वह व्यय जो प्रशासनिक कार्यों तथा सेवाओं के संचालन के लिए किया जाता है।

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 17 April 2018, Revised: 10 May 2018, Accepted: 28 June2018

How to Cite:
डॉ. प्रभात कुमार पाण्डेय (June 2018 Special Issue). सार्वजनिक व्यय का आर्थिक विकास में योगदान
***International Journal of Economic Perspectives*,*12*(1), 120-123**
Retrieved fromhttps://ijeponline.com/index.php/journal

आर्थिक विकास में सार्वजनिक व्यय की भूमिका

1. अवसंरचना का विकास : सड़कों, बिजली, सिंचाई, बंदरगाहों तथा परिवहन जैसी आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए सार्वजनिक व्यय अत्यंत आवश्यक है। भारत में **राष्ट्रीय राजमार्ग विकास कार्यक्रम** तथा **ग्रामीण सड़क योजनाओं** के माध्यम से लाखों किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया गया है, जिससे व्यापार और परिवहन में सुधार हुआ है।

2. कृषि विकास : सरकार द्वारा सिंचाई परियोजनाओं, उन्नत बीजों तथा कृषि अनुसंधान पर किए गए व्यय से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए भारत का कुल खाद्यान्न उत्पादन **1960 के दशक में लगभग 82 मिलियन टन था,** जो बढ़कर **2010–11 में लगभग 235 मिलियन टन** तक पहुँच गया।

3. औद्योगिक विकास : सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों की स्थापना तथा औद्योगिक नीतियों के माध्यम से सरकार ने औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन दिया है। इससे रोजगार और उत्पादन दोनों में वृद्धि हुई है।

4. रोजगार सृजन : सार्वजनिक परियोजनाओं के माध्यम से बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। सड़क निर्माण, सिंचाई परियोजनाएँ तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रम रोजगार के महत्वपूर्ण स्रोत बनते हैं।

5. आय वितरण में सुधार : सार्वजनिक व्यय के माध्यम से सरकार सामाजिक कल्याण योजनाएँ लागू करती है, जिससे गरीब वर्गों को सहायता मिलती है और आय असमानता को कम करने में मदद मिलती है।

6. मानव संसाधन विकास : शिक्षा और स्वास्थ्य पर किए गए सार्वजनिक व्यय से मानव संसाधनों का विकास होता है। वर्तमान मे भारत में **शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय GDP का लगभग 3–4 प्रतिशत** तथा **स्वास्थ्य पर लगभग 1–1.5 प्रतिशत** के आसपास रहा है।

परिणाम

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक व्यय आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार भारत में **केंद्र और राज्य सरकारों का कुल सार्वजनिक व्यय GDP का लगभग 30 प्रतिशत** के आसपास है। सार्वजनिक व्यय के माध्यम से अवसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। उदाहरण के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क निर्माण, सिंचाई परियोजनाओं तथा बिजली आपूर्ति में सुधार के कारण कृषि और व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि हुई है। हालाँकि सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। कई वर्षों में **राजकोषीय घाटा GDP के लगभग 5–6 प्रतिशत** तक पहुँच गया है, जिससे वित्तीय संतुलन बनाए रखना एक चुनौती बन जाता है। इसलिए आवश्यक है कि सार्वजनिक व्यय का उपयोग अधिक उत्पादक क्षेत्रों में किया जाए।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सार्वजनिक व्यय किसी भी देश के आर्थिक विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश में सरकार द्वारा किए जाने वाले व्यय का प्रभाव अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों पर पड़ता है। अवसंरचना के विकास, कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि, रोजगार सृजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार तथा सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के संचालन में सार्वजनिक व्यय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह स्पष्ट होता है कि केंद्र और राज्य सरकारों का कुल सार्वजनिक व्यय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 28–30 प्रतिशत तक पहुँच गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि आर्थिक गतिविधियों के संचालन और विकास में सरकार की भागीदारी निरंतर बढ़ती जा रही है। सार्वजनिक व्यय के माध्यम से सड़कों, सिंचाई परियोजनाओं, विद्युत उत्पादन, शिक्षा संस्थानों तथा स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हुआ है, जिससे उत्पादन क्षमता और मानव संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। हालाँकि सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे—राजकोषीय घाटे में वृद्धि, संसाधनों का अक्षम उपयोग तथा योजनाओं के क्रियान्वयन में प्रशासनिक बाधाएँ। इसलिए यह आवश्यक है कि सार्वजनिक व्यय का उचित नियोजन, पारदर्शी प्रबंधन तथा प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। यदि सरकारी व्यय को

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 17 April 2018, Revised: 10 May 2018, Accepted: 28 June2018

How to Cite:
डॉ. प्रभात कुमार पाण्डेय (June 2018 Special Issue). सार्वजनिक व्यय का आर्थिक विकास में योगदान
***International Journal of Economic Perspectives*,*12*(1), 120-123**
Retrieved fromhttps://ijeponline.com/index.php/journal

उत्पादक तथा विकासोन्मुख क्षेत्रों में प्राथमिकता दी जाए, तो यह न केवल आर्थिक विकास की गति को तेज कर सकता है, बल्कि सामाजिक समानता और समावेशी विकास को भी सुनिश्चित कर सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सुव्यवस्थित और संतुलित सार्वजनिक व्यय आर्थिक विकास की आधारशिला है। उचित नीतियों और प्रभावी प्रबंधन के माध्यम से सार्वजनिक व्यय को देश के समग्र और सतत विकास का सशक्त माध्यम बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अग्रवाल, ए. एन. (2007). भारतीय अर्थव्यवस्था की समस्याएँ. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
- दत्त, रूद्र., सुंदरम, के. पी. एम. (2009). भारतीय अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली: एस. चंद एंड कंपनी।
- मिश्रा, एस. के., पुरी, वी. के. (2008). भारतीय अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली: हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
- भारत सरकार. (2010). आर्थिक सर्वेक्षण 2009–10. नई दिल्ली: वित्त मंत्रालय।
- योजना आयोग. (2011). ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना रिपोर्ट. नई दिल्ली: योजना आयोग।
- डाल्टन (1954). लोक वित्त के सिद्धांत (Principles of Public Finance). लंदन: रूटलेज एंड केगन पॉल।
- पीगू, ए. सी. (1952). सार्वजनिक वित्त का अध्ययन (A Study in Public Finance). लंदन: मैकमिलन एंड कंपनी।
- मसग्रेव, रिचर्ड ए. (1959). लोक वित्त का सिद्धांत (The Theory of Public Finance). न्यूयॉर्क: मैकग्रा-हिल बुक कंपनी।

© 2018 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 17 April 2018, Revised: 10 May 2018, Accepted: 28 June2018